17 जनवरी 2012, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
# पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये

जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 20 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जनवरी (द्वितीय), 2012 (वीर नि. संवत्-2538) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

## वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

**काटोल (नागपुर) :** यहाँ नवनिर्मित श्री महावीर स्वामी दिगंबर जिनमंदिर एवं श्री कुंदकुंद कहान स्वाध्याय भवन में भगवान महावीर, भगवान पार्श्वनाथ एवं भगवान सीमंधरस्वामी के वीतरागी दिगंबर जिनबिम्ब विराजमान करने हेतु दिनांक 24 से 26 दिसम्बर 2011 तक वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न हुआ। महोत्सव के संपूर्ण कार्यक्रम ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री व पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर शास्त्री काटोल के नेतृत्व व निर्देशन में संपन्न हुए।

इस अवसर पर पण्डित उत्तमचंदजी जैन छिंदवाडा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर, पण्डित दिनेशभाई शहा मुंबई, सौ. उज्ज्वला शहा मुंबई आदि विद्वानों के विविध विषयों पर मार्मिक प्रवचनों का धर्मलाभ उपस्थित श्रोताओं को मिला।

इस प्रसंग पर पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित श्रुतेशजी सातपुते शास्त्री नागपुर, पण्डित महावीरजी मांगुलकर शास्त्री, पण्डित मनीषजी शास्त्री सिद्धांत, पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर, पण्डित आदेशजी बोरालकर शास्त्री, पण्डित रवींद्रजी महाजन शास्त्री, पण्डित सुकुमारजी शास्त्री आदि विद्वान तथा श्री आदिनाथजी नखाते, श्री विश्वलोचनजी जैनी, श्री अशोकजी जैन, श्री सुदीपजी जैनी, श्री जयकुमारजी देवडिया, श्री संदीपजी जैनी, श्री नरेशजी सिंघई आदि मान्यवर उपस्थित थे।

इस महोत्सव में नागपुर, वर्धा, छिंदवाडा, जबलपुर, बैतूल, जालना, औरंगाबाद, नाशिक, अहमदनगर आदि स्थानों से पधारे साधर्मी भाइयों का विशाल जनसमूह उपस्थित था। इस महोत्सव को सफल बनाने हेतु श्री कुंदकुंद दि. जैन मुमुक्षु मंडल नागपुर, श्री कुंदकुंद कहान स्वाध्याय मंडल काटोल तथा मंडल के सदस्य सौ. शुभांगी मांगुलकर, सौ. सरला सावलकर आदि ने विशेष प्रयास किया। श्री महावीर विद्या निकेतन छात्रावास नागपुर के छात्रों ने अनेक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

विधि-विधान का संपूर्ण कार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली एवं सहयोगी पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर शास्त्री काटोल, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इंदौर, पण्डित रमेशजी ज्ञायक इंदौर, पण्डित अशोकजी मांगुलकर राघौगढ आदि विद्वानों की सहायता से संपन्न हुआ।

**- श्रुतेश सातपुते शास्त्री**

## बाहुबलि विधान संपन्न

**बड़ौदा (गुज.) :** यहाँ दिनांक 8 जनवरी 2012 को श्री अजितजी जैन बड़ौदा परिवार की ओर से उन्हीं के निवास स्थान पर बाहुबली विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अहमदाबाद, दाहोद एवं बड़ौदा के अनेक साधर्मियों ने लाभ लिया। कार्यक्रम में श्री प्रफुल्लभाई डी.राजा नैरोबी भी उपस्थित थे।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा के निर्देशन में पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली, पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम, पण्डित सुमितजी शास्त्री जयपुर, पण्डित दीपकभाई कोटडिया आदि के सहयोग से संपन्न हुये।

ज्ञातव्य है कि श्री टोडरमल स्मारक भवन की छत पर भगवान बाहुबली की 91 इंची श्वेत पाषाण की खड्गासन प्रतिमा श्री अजितजी जैन बड़ौदा परिवार की ओर से ही विराजमान होनी है, इसी के अन्तर्गत बहुमान एवं भावना से प्रेरित होकर उन्होंने अपने यहाँ भगवान बाहुबली विधान का आयोजन किया।

अन्त में सभी साधर्मियों को भगवान बाहुबली का स्मृति चिह्न भेंट स्वरूप दिया गया।

## आध्यात्मिक युवा शिविर संपन्न

**उदयपुर (राज.) :** यहाँ मण्डी स्थित श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जिन मंदिर में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट, उदयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 25 दिसम्बर 2011 से 1 जनवरी 2012 तक आध्यात्मिक युवा शिविर अत्यंत सफलता के साथ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली एवं पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में जिनदर्शन, सात तत्त्व, द्रव्यगुणपर्याय, चार अभाव, सदाचार, क्रमबद्धपर्याय आदि विषयों का प्रारम्भिक ज्ञान कराया गया।

दिनांक 1 जनवरी को नववर्ष के अवसर पर डॉ. राकेशजी शास्त्री एवं पण्डित विरागजी शास्त्री का प्रासंगिक और सारगर्भित व्याख्यान हुआ, जिसका प्रसारण अमेरिका व कनाडा के अनेक स्थानों पर हुआ।

**- लक्ष्मीमल बण्डी एवं कमल गदिया, उदयपुर**

**सम्पादकीय -**

# आत्मा से परमात्मा बनने का महोत्सव पंचकल्याणक महोत्सव

**- पण्डित रतनचन्द भारिल्ल, जयपुर**

आपने अपने जीवन में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव तो बहुत देखे होंगे; परन्तु उन आयोजनों में आप अब तक यह शायद ही जान पाये होंगे कि इन सभी कार्यक्रमों में आत्मा से परमात्मा बनने की प्रक्रिया क्या है ?

यह तो एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है, सत्य है कि साक्षात् अरहन्त भगवान के अभाव में उनकी प्रतिमा वही काम करती है, जो साक्षात् अरहन्त भगवान करते हैं। कहा भी है -

**''जिन प्रतिमा जिन सारखी, कही जिनागम मांहि।''**

साक्षात् समवशरण में भी हमें जिनेन्द्र भगवान के परमौदारिक पौद्गलिक शरीर के ही दर्शन होते हैं ; क्योंकि अमूर्तिक वीतरागी भगवान आत्मा के दर्शन तो इन चर्म चक्षुओं से हो ही नहीं सकते।

लोक व्यवहार चलाने के लिए जिनागम में चार निक्षेपों का विधान है। नाम, स्थापना, द्रव्य एवं भाव। इनमें स्थापना निक्षेप के दो भेद हैं (1) तदाकार स्थापना (2) अतदाकार स्थापना। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में वीतरागता की प्रतीक तदाकार जिन प्रतिमा में जिनेन्द्र देव की स्थापना (प्रतिष्ठा) की जाती है। प्रतिष्ठा से वे प्रतिमायें पूज्य हो जाती हैं।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में जिनेन्द्र भगवान के गर्भ कल्याणक से लेकर मोक्ष कल्याणक तक के सभी कार्यक्रमों का भव्य प्रदर्शन तो होता ही है, मंत्रोच्चार पूर्वक विधिनायक प्रतिमा एवं अन्य सभी प्रतिष्ठेय प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा-विधि भी सम्पन्न होती है।

यह सप्त दिवसीय कार्यक्रम बहुत विशाल स्तर पर होता है। सारे देश-विदेश से हजारों व्यक्ति इसके साक्षी बनते हैं। बड़े-बड़े विद्वानों के माध्यम से जिनेन्द्र वाणी सुनने के अवसर मिलते हैं। दिनभर तो कार्यक्रम चलते हैं, रात को 10-11 बजे तक अनेक ज्ञान-वैराग्यवर्द्धक एवं मनोरंजक कार्यक्रम चलते रहते हैं।

यद्यपि व्यवस्थापक यथासंभव अच्छी से अच्छी व्यवस्थायें करते हैं; परन्तु घर जैसी सुख-सुविधायें तो संभव हो ही नहीं सकतीं, सभी आगंतुक महानुभाव यह भलीभाँति जानते हैं; अत: किसी को भी व्यवस्था सम्बन्धी कभी कोई शिकायत नहीं रहती अर्थात् उनका रुख अनुकूल ही रहता है। अस्तु।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के माध्यम से जयपुर में दिनांक 21 फरवरी से 27 फरवरी 2012 में होने वाले उक्त आयोजन की सुव्यवस्था, अनावश्यक क्रियाओं को कम करने तथा आवश्यक वैराग्यवर्द्धक कार्यक्रमों को जोड़ने के बारे में मुझे कुछ नहीं कहना है, कुछ आश्वासन भी नहीं देना है। उसे तो आप स्वयं देखकर ही अनुभव करेंगे कि यह आयोजन सभी दृष्टियों से अभूतपूर्व हुआ है। आयोजन की पूर्व तैयारी से ही अनुमान लगाया जा सकता है कि आयोजन कैसा होगा ? मौसम के चुनाव से ही अनुमान लगाया जा सकता है कि फरवरी माह में न अधिक गर्मी है, न अधिक ठंड। स्थान अतिभव्य, अतिविशाल, नगर के मध्य शिक्षा का केन्द्र, चारों ओर पक्की बाउंड्री, चारों ओर चार विशालगेट एवं सभी गेटों पर चौकीदारों की भरपूर व्यवस्था है, जिसे देखते ही दर्शकों का मन मयूर नाच उठेगा। आसपास अनेक विशाल होटल, बाउंड्री के अन्दर ही विशाल मैदान व पार्किंग की पूर्ण व्यवस्था।

यह स्थान यद्यपि पण्डित टोडरमल स्मारक भवन से लगभग 10 किलोमीटर है; परन्तु रेलवे स्टेशन से मात्र 3 किलोमीटर तथा शहर से भी नजदीक पड़ता है। इसे भवानी निकेतन नाम से जाना जाता है; क्योंकि यह पहले महाराजा भवानीसिंह की निजी सम्पत्ति थी, जो बाद में शिक्षा के लिए समर्पित कर दी गई। इसमें अभी प्राइमरी से लेकर पोस्ट ग्रेजुएट, इंजीनियरिंग कालेज आदि शिक्षा की उत्तम व्यवस्था है।

इसका कुछ भाग मिनीमम रेट पर धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों के लिए दिया जाता है, जिसकी प्राप्त आय प्रायः इसी के मेन्टीनेन्स में या शिक्षा के लिए प्रदान की जाती है।

इस महोत्सव में श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में वर्तमान 160 छात्रों के अतिरिक्त सभी भूतपूर्व लगभग 700 छात्र विद्वानों के समागम का सुयोग भी प्राप्त होगा। और नया क्या-क्या होगा ? सब कुछ बता पाना यहाँ संभव नहीं है, वह सब कुछ जानने-देखने के लिए तो आपको यहीं आना होगा। यहाँ तो मैं इतना कहना/बताना चाहता हूँ कि भव्य पंचकल्याणक महोत्सव इसमें सक्रिय भाग लेने वालों के कल्याण में तो निमित्त बनेगा ही, दर्शकों एवं भगवान की वीतराग वाणी के भव्य श्रोताओं के कल्याण में भी निमित्त बनेगा। इसमें वीतरागी भगवान बनने की यथार्थ प्रक्रिया के प्रदर्शन के साथ सर्वज्ञ भगवान की दिव्यवाणी सुनने के अधिकतम अवसर प्राप्त होंगे, जो हमारे अनादिकाल से बंधे मोहादि कर्मक्षय में निमित्त होंगे।

इस आयोजन में बोलियों में अधिक समय खराब नहीं किया जायेगा। अति आवश्यक तात्कालिक लगने वाली बोलियाँ भी यथासंभव शीघ्र ही समाप्त कर दीं जायेगी। एतदर्थ बड़ी-बड़ी बोलियों के लिए पूर्व में ही सम्पर्क किया जा रहा है, ताकि उस समय अधिकतम काल का जिनवाणी श्रवण हेतु उपयोग किया जा सके।

गर्भकल्याणक एवं जन्म कल्याणक के दिनों में भी राग-रंग के कार्यक्रम आध्यात्मिक भावनाओं से भरपूर ही होंगे। वे भी जो अति

आवश्यक व अनिवार्य होंगे, वे ही होंगे। इनमें यह ध्यान रखा जायेगा कि वे अरुचिकर न हों, सरस हों। राजा–रानी एवं इन्द्र–इन्द्राणी सत्पात्रों के तात्त्विक संवाद निश्चित ही श्रोताओं के हृदयों को छूनेवाले होंगे।

छोटी–छोटी बालिकाओं के आकर्षक नृत्यगान, अवश्य ही हमारे चित्त को आकर्षित करेंगे। सभी कार्यक्रम पूर्ण अहिंसक होंगे। किसी भी आयोजन में हाथी, घोड़ा, बैल आदि मूक पशुओं का उपयोग नहीं किया जायेगा। विशालकाय ऐरावत हाथी भी फाइबर आदि का होगा।

मुझे इस समय एक घटना याद आ रही है। जिसे कहे बिना मैं नहीं रह सकता। बात मध्यप्रदेश की है। उस पंचकल्याणक में राजमाता सिंधिया आई हुईं थीं, उनके सम्मान में जब हमने धागे की माला पहनाई तो उन्हें कुछ अटपटा सा लगा; उनसे नहीं रहा गया और उन्होंने मुझसे कहा – क्या यहाँ फूल उपलब्ध नहीं थे, जो धागों की मालाओं से स्वागत किया गया। तब मैंने उनका समाधान तो कर ही दिया तथा अपने भाषण में भी कहा कि हम जैन हैं और जैन लोग फूलों को सचित्त मानते हैं; अतः फूलों का उपयोग नहीं करते, तो वे बहुत प्रभावित हुईं और उन्होंने अपने भाषण में इस बात का उल्लेख करते हुए बारंबार यह बात दुहराई कि जैनधर्म इतनी सूक्ष्म हिंसा से भी बचता है, ऐसी सूक्ष्म हिंसा को भी अवाइड करता है। हम मनों फूल शादी–ब्याहों में बर्बाद करते हैं, पैरों से कुचलते हैं, जो नहीं करना चाहिए।

जैनदर्शन केवल नर से नारायण, भक्त से भगवान बनाने वाला दर्शन नहीं है; बल्कि पशु से परमात्मा बनाने वाला दर्शन है। इस पंचकल्याणक में आगम के अनुकूल तत्त्वज्ञानपरक, वैराग्यवर्द्धक प्रवचनों एवं प्रदर्शनों की मुख्यता रहेगी, फिर भी ऐसा प्रयत्न रहेगा कि सभी कार्यक्रम चित्ताकर्षक हों। एतदर्थ वे सभी साधन जुटाने का प्रयत्न रहेगा जो सबको पसंद आयें और सभी कुछ न कुछ नया ग्रहण करके जायें तथा युगों तक इसे याद करते रहें।

कुछ लोग इस विचारधारा के हैं कि मन्दिर और मूर्तियाँ बहुत हो चुकी हैं अब नये मन्दिरों और आये दिन होने वाले पंचकल्याणकों पर रोक लगनी चाहिए।

उनसे हमारा विनम्र निवेदन यह है कि उन्हें इस ओर भी ध्यान देना चाहिए कि वर्तमान में नित्य नई–नई कालोनियाँ बन रही हैं, जैन भी देहातों से शहर की ओर आ रहे हैं। यदि वहाँ नवीन कालोनियों में मन्दिर नहीं बनेंगे तो आज के व्यक्ति बिना दर्शन–पूजन के ही रह जायेंगे। मूर्तियाँ भी एक से एक बढ़कर बन रही हैं। कोई प्राचीन मूर्तियों से संतुष्ट नहीं होते। प्राचीन रख लेंगे; परन्तु साथ ही नवीन वेदी व नवीन मूर्ति भी हर एक को चाहिए। ऐसी स्थिति में वे कोरे आदर्श काम नहीं आयेंगे।

अतः युग की आवश्यकता का अनुभव करते हुए जहाँ आवश्यकता है, वहाँ तो मन्दिर बनेंगे मूर्तियाँ भी बनना ही चाहिए। हाँ, जहाँ पहले से ही अनेक मन्दिर हैं, वहाँ नवीन मन्दिर बनाना उचित नहीं है। ●

**चाईनीज मांजे के विरुद्ध –**

## पोस्टर का विमोचन

**उदयपुर (राज.) :** यहाँ गायरियावास स्थित चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्श नगर में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा चाईनीज मांजे के विरुद्ध एक पोस्टर का विमोचन हुआ।

इस पोस्टर का विमोचन डॉ.राकेश जैन नागपुर ने किया और कहा कि इससे पतंग उड़ाने पर यह पक्षियों के पंख आदि में फंस जाता है और अन्ततोगत्वा पक्षियों को जान गंवानी पड़ती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री भागचंदजी कालिका (समाजसेवी) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली एवं विशिष्ट अतिथि श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर (प्रदेश अध्यक्ष–फैडरेशन) व श्री दीपचंदजी गांधी गायरियावास थे।

इस अवसर पर उपस्थित सभी साधर्मियों ने चाइनीज मांजा उपयोग न करने का संकल्प पत्र भरा। कार्यक्रम का संचालन डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर ने एवं आभार प्रदर्शन श्री अशोकजी गदिया (जिला महामंत्री–फैडरेशन) ने किया।

## साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

**जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में आयोजित होने वाली साप्ताहिक गोष्ठियों के अन्तर्गत दिनांक 11 जनवरी को 'श्रावक के षट् आवश्यक' विषय पर उपाध्याय वर्ग की एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर ने की।

गोष्ठी में प्रथम स्थान अभिषेक जैन हीरापुर (म.प्र.) एवं द्वितीय स्थान नरेश जैन भंगवा (म.प्र.) ने प्राप्त किया।

गोष्ठी का संचालन विवेक जैन दिल्ली एवं आशीष जैन टोंक ने किया।

## दानदातारों से निवेदन

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के बैंक अकाउंट में इन्टरनेट बैंकिंग द्वारा दानराशि भेजने वाले सभी दातारों से निवेदन है कि वे जो भी दानराशि बैंक में डायरेक्ट जमा कराते हैं, उसकी जानकारी जयपुर कार्यालय को पत्र/ई–मेल/फैक्स/एस.एम.एस. द्वारा अवश्य भेजें, ताकि उसका जमाखर्च कर उसकी रसीद भेजी जा सके।

**संपर्क सूत्र : श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर–15; 0141–2707458, 2705581, फैक्स नं.–2704127**

**E-mail- info@ptst.in, ptstjaipur@yahoo.com**

**09314404177 (जवाहरलालजी जैन, अकाउन्टेन्ट)**

**09785643202 (पीयूषजी जैन, मैनेजर)**

## ट्रेन के टिकिट तत्काल बुक करायें

**पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु जयपुर आने के लिए ट्रेन के आरक्षण खुल गये हैं। यदि आपने अपना रिजर्वेशन अभी तक न कराया हो तो कृपया शीघ्रता करें।**

# आदर्श पंचकल्याणक

नवीन जिन–बिम्बों की विधि–पूर्वक प्रतिष्ठा करने हेतु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सवों के आयोजन की परम्परा दिगम्बर जैन समाज में सैकड़ों वर्षों से चली आ रही है। आध्यात्मिकसत्पुरुष पूज्य गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी द्वारा प्ररूपित तत्त्वज्ञान से अनुप्राणित होकर हमारे सभी धार्मिक अनुष्ठान जीवन्त और सार्थक होकर आदर्शरूप ग्रहण करते जा रहे हैं। पूजा–पाठ में अध्यात्म रस का परिपाक, शोभायात्राओं में भी आध्यात्मिक गीतों की गूँज, इन्द्रसभा आदि मंच के कार्यक्रमों में भी अध्यात्म की चर्चा आदि अनेक रूपों में मुमुक्षु समाज द्वारा आयोजित प्रतिष्ठा महोत्सव आदर्श कहे जा सकते हैं।

इसी शृंखला में दिनांक 21 फरवरी से 27 फरवरी 2012 तक जयपुर में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आदर्श और भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हो रहा है। नवम्बर 2012 में तीर्थराज सम्मेदशिखर पर भी मुमुक्षु समाज द्वारा आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन घोषित हो चुका है।

जयपुर में आयोजित पंचकल्याणक महोत्सव को भव्य और आदर्श घोषित करने का अभिप्राय मात्र इतना ही है कि मुमुक्षु समाज द्वारा अब तक आयोजित प्रतिष्ठा महोत्सवों के आदर्शरूप में यह जो कुछ विकृतियाँ आ गई हैं; जो कुछ भी थोड़ी बहुत कमी रह जाती है; उन्हें दूर करके इस महोत्सव को अधिकतम आदर्श रूप देने के प्रयास किये जायें, ताकि भविष्य के लिए भी आदर्श परम्परा स्थापित की जा सके। यदि कदाचित् इनमें भी कोई कमी रह जाये तो उसे आगामी महोत्सवों में दूर करने के प्रयास किये जायें।

यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि आदर्श महोत्सव किसे कहा जाये? हो सकता है कि कोई कार्य हमें आदर्श लगे; परन्तु वही कार्य अन्य लोगों को उचित न लगे। अतः आदर्श रूप की ऐसी परिभाषा सुनिश्चित होना चाहिए जो सबको नहीं तो अधिकतम लोगों को स्वीकार्य हो।

इसमें सन्देह नहीं होना चाहिए कि महोत्सव का हर अंग देव–शास्त्र–गुरु की भक्ति उनके द्वारा प्रतिपादित या उनमें विद्यमान तत्त्वज्ञान का पोषक, प्रचारक और मर्यादा का पोषक हो, तभी वह आदर्श रूप ग्रहण कर सकेगा।

प्रतिष्ठा महोत्सव का उद्देश्य रुचिवान जीवों को रुचि का पोषण तथा रुचि विहीन लोगों को अध्यात्म की रुचि जाग्रत करने का हो, तभी महोत्सव अपना आदर्शरूप ग्रहण कर सकेगा। इसके लिये हमें निम्नांकित बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है –

(1) पूजन–विधान आदि मध्यम स्वरों में पढ़े जायें, संगीत बहुत तेज न हो। समय–समय पर उनमें समागत सिद्धान्तों का मर्म भी बताया जाये।

(2) सायंकालीन भक्ति भी पंचपरमेष्ठी के गुणों की मुख्यता से हो। कर्तृत्व की पोषक तथा आधुनिक फिल्मी धुनों की भक्ति न हो।

(3) पूजन–भक्ति तथा अन्य प्रसंगों पर होने वाले नृत्य भी शालीन एवं मर्यादित हों। महिलाएँ और पुरुष एक साथ नृत्य न करें।

(4) भजन मण्डली द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले गीत भी प्रासंगिक और अध्यात्म रस से भरपूर हों।

(5) बोलियों में समय कम से कम लगाया जाये। जो समय बचे उसका उपयोग सामूहिक आध्यात्मिक पाठ में किया जाये, जिससे समागत साधर्मियों को अध्यात्म रस पान करने के अधिक अवसर मिल सकें।

(6) तप कल्याणक के दिन सभी साधर्मी भाई–बहन श्वेत वस्त्र धारण करें।

(7) अधिक से अधिक वक्ताओं के प्रवचन रखने के बदले अध्यात्म रस परिपाक हो सके – ऐसे चुने हुए वक्ताओं के प्रवचन रखे जायें।

(8) पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों के मार्मिक बिन्दुओं का विशेष स्पष्टीकरण हो।

(9) सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्राचीन कवियों की भजन संध्या, विद्यालयों के छात्रों द्वारा संक्षिप्त तात्विक नाटक प्रस्तुत किये जायें।

(10) शोभायात्रा में अनावश्यक बैण्ड न रखे जायें।

(11) भजन मण्डली के 2–3 वाहन हों, जिसमें उत्साहपूर्वक रथ–यात्रा गीत गाये जायें।

(12) शोभा यात्रा में पशुओं का उपयोग न किया जाये।

(13) शोभा यात्रा की दूरी यथासम्भव कम से कम रखी जाये।

(14) सभी साधर्मी भाई बहन कतारबद्ध एवं अनुशासित होकर चलें।

(15) रास्ते में कुछ भी खाने पीने का त्याग करें। यदि अनिवार्य हो तो रास्ते में मात्र शुद्ध जल की व्यवस्था की जाये।

(16) भोजन में कोई अभक्ष्य वस्तु का प्रयोग न किया जाए।

(17) भोजन राजसिक न होकर सात्विक और स्वादिष्ट तथा मौसम एवं स्वास्थ के अनुकूल हो।

(18) भोजन दिन में ही तैयार किया जाए तो एक अनुकरणीय आदर्श होगा।

(19) भोजन सामग्री का शोधन कर लिया जाए।

(20) अतिथियों के बैठने की समुचित व्यवस्था की जाए।

(21) शुद्ध एवं मर्यादित सामग्री वाले भोजनालय में अनाधिकृत व्यक्ति न जायें।

(22) भोजन बनाने हेतु छने जल के प्रयोग पर विशेष ध्यान दिया जाए।

(23) स्वल्पाहार ग्रहों के संचालकों को भी अभक्ष्य पदार्थों का उपयोग न करने तथा छने जल का उपयोग करने में विशेष निर्देश दिये जायें।

आशा है सभी सम्बन्धित लोग इन सुझावों पर गम्भीरता से विचार करके सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज को आदर्श महोत्सव के आयोजन हेतु प्रेरित करेंगे। **– अभयकुमार जैन, देवलाली**

# मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

## 88 चौबीसवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यदि पुरुषार्थपूर्वक उद्यम की बात करें, तब भी उपदेश निरर्थक ही है; क्योंकि उपदेश सुनकर भी कुछ लोग पुरुषार्थ कर सकते हैं और कुछ नहीं। यदि उपदेश से पुरुषार्थ होता होता तो सभी को पुरुषार्थ होना चाहिए था; पर ऐसा होता नहीं। अत: उपदेश निरर्थक है।

सारी बात उपदेश की है। उक्त सम्पूर्ण कथन उपदेश की उपयोगिता पर प्रश्नचिह्न लगाने का प्रयास है।

उक्त कथन का निराकरण करते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

**''एक कार्य होने में अनेक कारण मिलते हैं। सो मोक्ष का उपाय बनता है, वहाँ तो पूर्वोक्त तीनों ही कारण मिलते हैं और नहीं बनता वहाँ तीनों ही कारण नहीं मिलते।**

**पूर्वोक्त तीन कारण कहे उनमें काललब्धि व होनहार तो कोई वस्तु नहीं है; जिस काल में कार्य बनता है, वही काललब्धि और जो कार्य हुआ, वही होनहार।**

**तथा जो कर्म के उपशमादिक हैं, वह पुद्गल की शक्ति है; उसका आत्मा कर्त्ता-हर्त्ता नहीं है। तथा पुरुषार्थ से उद्यम करते हैं, सो यह आत्मा का कार्य है; इसलिए आत्मा को पुरुषार्थ से उद्यम करने का उपदेश देते हैं।**

**वहाँ यह आत्मा जिस कारण से कार्यसिद्धि अवश्य हो, उस कारणरूप उद्यम करे; वहाँ तो अन्य कारण मिलते ही मिलते हैं और कार्य की भी सिद्धि होती ही होती है।**

**तथा जिस कारण से कार्य की सिद्धि हो अथवा नहीं भी हो, उस कारणरूप उद्यम करे, वहाँ अन्य कारण मिलें तो कार्यसिद्धि होती है, न मिलें तो सिद्धि नहीं होती।**

**सो जिनमत में जो मोक्ष का उपाय कहा है, इससे मोक्ष होता ही होता है। इसलिए जो जीव पुरुषार्थ से जिनेश्वर के उपदेशानुसार मोक्ष का उपाय करता है, उसके काललब्धि व होनहार भी हुए और कर्म के उपशमादि हुए हैं तो वह ऐसा उपाय करता है। इसलिए जो पुरुषार्थ से मोक्ष का उपाय करता है, उसको सर्व कारण मिलते हैं और उसको अवश्य मोक्ष की प्राप्ति होती है – ऐसा निश्चय करना। तथा जो जीव पुरुषार्थ से मोक्ष का उपाय नहीं करता, उसके काललब्धि व होनहार भी नहीं और कर्म के उपशमादि नहीं हुए हैं तो यह उपाय नहीं करता।**

**इसलिए जो पुरुषार्थ से मोक्ष का उपाय नहीं करता, उसको कोई कारण नहीं मिलते और उसको मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती – ऐसा निश्चय करना।**

**तथा तू कहता है – उपदेश तो सभी सुनते हैं, कोई मोक्ष का उपाय कर सकता है, कोई नहीं कर सकता; सो कारण क्या ?**

**उसका कारण यही है कि जो उपदेश सुनकर पुरुषार्थ करते हैं, वे मोक्ष का उपाय कर सकते हैं; और जो पुरुषार्थ नहीं करते, वे मोक्ष का उपाय नहीं कर सकते। उपदेश तो शिक्षामात्र है, फल जैसा पुरुषार्थ करे, वैसा लगता है।[१]''**

यहाँ जिन कारणों की चर्चा की है, उनमें कार्योत्पत्ति के समय होनेवाले पाँच समवाय समाहित हैं – ऐसा समझना चाहिए।

देखा, पण्डित टोडरमलजी आरंभ में ही यह बात कह देते हैं कि प्रत्येक कार्य के होने में अनेक कारण होते हैं। चूंकि यहाँ मोक्ष के उपायरूप अर्थात् मोक्षमार्गरूप कार्य की चर्चा चल रही है; अत: मोक्षमार्ग पर ही इस बात को घटित किया गया है। कहा गया है कि जहाँ मोक्ष का उपायरूप कार्य होता है, वहाँ उक्त तीनों कारण मिलते ही मिलते हैं और जहाँ मोक्ष के उपायरूप कार्य नहीं होता, वहाँ तीनों ही कारण नहीं मिलते, तीनों में से एक भी कारण नहीं मिलता।

ऐसा नहीं है कि कुछ कारण तो मिल गये, पर कुछ नहीं मिल पाये; इसलिए कार्य नहीं हुआ; क्योंकि ऐसा होता ही नहीं है।

ध्यान रहे हमें कभी-कभी लगता है कि मैंने पुरुषार्थ तो खूब किया, पर काललब्धि नहीं आई, इसलिए कार्य नहीं हुआ; कर्म के उपशमादि नहीं हुए, इसलिए कार्य अटक गया; पर इस बात में कुछ भी दम नहीं है; क्योंकि **जब कार्य होना होता है, तब सभी कारण मिलते ही मिलते हैं और जब कार्य नहीं होना होता है, तब सही रूप में एक भी कारण नहीं मिलता।**

इस बात को स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं कि काललब्धि और होनहार तो कुछ वस्तु ही नहीं है; जिस काल में जो कार्य होना हो; वही उस कार्य की काललब्धि है और उस कार्य का होना ही होनहार है।

**'कुछ वस्तु नहीं है' – का अर्थ मात्र इतना ही है कि उसमें तुझे कुछ नहीं करना है; क्योंकि काललब्धि और होनहार तो सदा ही रहते हैं। प्रतिसमय प्रत्येक द्रव्य की कोई न कोई पर्याय (कार्य) होती ही है। इसमें वह पर्याय होनहार है और वह समय काललब्धि है।**

जब यह कहा जाता है कि अभी काललब्धि नहीं आई; तब वह किसी विशेष (Particular) कार्य की बात होती है। यहाँ मोक्ष के उपायरूप कार्य की बात है। उसकी काललब्धि नहीं है – ऐसा आशय है।

**काललब्धि, होनहार और कर्मों के उपशमादि के लिए तुझे कुछ भी नहीं करना है; तू यदि आत्मश्रद्धान, आत्मज्ञान और आत्मध्यानरूप पुरुषार्थ करे तो शेष अन्य कारण भी मिलते ही हैं; क्योंकि मोक्ष के उपायरूप कार्य का सच्चा पुरुषार्थ एकमात्र यही है।**

जब मैं उक्त पुरुषार्थ करूँगा, तब काललब्धि आ जावेगी, होनहार भी हो जावेगी तथा कर्म का उपशम भी हो ही जायेगा न ?

अरे, भाई ! जब तेरी काललब्धि आवेगी, होनहार होगी और कर्म के उपशमादि होंगे; तभी तुझसे सम्यक् पुरुषार्थ होगा। **जबतक का अर्थ आगे-पीछे नहीं, सब एक साथ ही होते हैं। तीनों कारण अपने-अपने कारण एक साथ ही होते हैं।**

इस पर वह कहता है कि द्रव्यलिंगी मिथ्यादृष्टि मुनि तो भरपूर पुरुषार्थ करते हैं; पर उनको सिद्धि क्यों नहीं होती ?

अरे, भाई ! बाह्य क्रियाकाण्ड और शुभभावरूप पुरुषार्थ का फल तो स्वर्गादि है; वह उसको मिलते ही हैं; पर जबतक वह शुद्धोपयोगरूप सच्चा पुरुषार्थ नहीं करेगा; तबतक कार्यसिद्धि कैसे हो सकती है ?

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, नौवाँ अधिकार, पृष्ठ ३०९-३१०

जब यह अज्ञानी जीव सच्चा पुरुषार्थ न करने में कर्मोदयादि का दोष बताकर अपने उत्तरदायित्व से बचना चाहता है तो पण्डितजी कहते हैं-

**''तत्त्वनिर्णय करने में उपयोग न लगाये, वह तो इसी का दोष है। तथा पुरुषार्थ से तत्त्वनिर्णय में उपयोग लगाये, तब स्वयमेव ही मोह का अभाव होने पर सम्यक्त्वादिरूप मोक्ष के उपाय का पुरुषार्थ बनता है।**

**इसलिए मुख्यता से तो तत्त्वनिर्णय में उपयोग लगाने का पुरुषार्थ करना। तथा उपदेश भी देते हैं, सो यही पुरुषार्थ कराने के अर्थ दिया जाता है। तथा इस पुरुषार्थ से मोक्ष के उपाय का पुरुषार्थ अपने आप सिद्ध होगा।**

**और तत्त्वनिर्णय न करने में किसी कर्म का दोष है नहीं, तेरा ही दोष है; परन्तु तू स्वयं तो महन्त रहना चाहता है और अपना दोष कर्मादिक को लगाता है; सो जिन-आज्ञा माने तो ऐसी अनीति सम्भव नहीं है। तुझे विषय-कषायरूप ही रहना है, इसलिए झूठ बोलता है।**

**मोक्ष की सच्ची अभिलाषा हो तो ऐसी युक्ति किसलिए बनाये ?**

**सांसारिक कार्यों में अपने पुरुषार्थ से सिद्धि न होती जाने; तथापि पुरुषार्थ से उद्यम किया करता है, यहाँ पुरुषार्थ खो बैठा; इसलिए जानते हैं कि मोक्ष को देखादेखी उत्कृष्ट कहता है; उसका स्वरूप पहिचानकर उसे हितरूप नहीं जानता। हित जानकर उसका उद्यम बने सो न करे - यह असंभव है।[१]''**

देखो, यहाँ पण्डितजी बहाने बनाकर सम्यक् पुरुषार्थ से विमुख रहने वाले अज्ञानियों को दोषी, अनैतिक, कषायी, झूठा, पुरुषार्थहीन, अनुद्यमी आदि विशेषणों से अलंकृत कर रहे हैं और तत्त्वनिर्णय करने की दिशा में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा दे रहे हैं।

**मुक्ति के मार्ग में बुद्धिपूर्वक किये जानेवाला पुरुषार्थ तो एकमात्र तत्त्वनिर्णय करना ही है, तत्त्वनिर्णय करने में उपयोग लगाना ही है; क्योंकि इसप्रकार के प्रयास से अर्थात् तत्त्वनिर्णय से ही सम्यग्दर्शनादिरूप मोक्ष के उपाय का पुरुषार्थ प्रगट होता है।**

पण्डित टोडरमलजी यहाँ इस बात की गारंटी दे रहे हैं कि यदि **विचार शक्ति सहित मंद रागी जीव तत्त्वनिर्णय करने में उपयोग लगावें तो उनका उपयोग तत्त्वनिर्णय करने में अवश्य लगेगा और उन्हें तत्त्वों के संबंध में सही निर्णय भी अवश्य होगा।**

अपनी बात स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं -

**''विचारशक्तिरहित जो एकेन्द्रियादिक हैं, उनके तो उपदेश समझने का ज्ञान ही नहीं है; और तीव्र रागादि सहित जीवों का उपयोग उपदेश में लगता नहीं है। इसलिए जो जीव विचारशक्तिसहित हों, तथा जिनके रागादि मन्द हों; उन्हें उपदेश के निमित्त से धर्म की प्राप्ति हो जाये तो उनका भला हो; तथा इसी अवसर में पुरुषार्थ कार्यकारी है।**

**एकेन्द्रियादिक तो धर्मकार्य करने में समर्थ ही नहीं हैं, कैसे पुरुषार्थ करें ? और तीव्र कषायी पुरुषार्थ करे तो वह पाप ही का करे, उनसे धर्मकार्य का पुरुषार्थ हो नहीं सकता।**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, नौवाँ अधिकार, पृष्ठ ३११

**इसलिए जो विचारशक्तिसहित हो और जिसके रागादिक मन्द हों, वह जीव पुरुषार्थ से उपदेशादिक के निमित्त से तत्त्वनिर्णय में उपयोग लगाये तो उसका उपयोग वहाँ लगे और तब उसका भला हो।**

**यदि इस अवसर में भी तत्त्वनिर्णय करने का पुरुषार्थ न करे, प्रमाद से काल गँवाये या तो मन्दरागादि सहित विषयकषायों के कार्यों में ही प्रवर्ते या व्यवहारधर्मकार्यों में प्रवर्ते; तब अवसर तो चला जायेगा और संसार में ही भ्रमण होगा।**

**तथा इस अवसर में जो जीव पुरुषार्थ से तत्त्वनिर्णय करने में उपयोग लगाने का अभ्यास रखें, उनके विशुद्धता बढ़ेगी; उससे कर्मों की शक्ति हीन होगी, कुछ काल में अपने आप दर्शनमोह का उपशम होगा; तब तत्त्वों की यथावत् प्रतीति आयेगी। सो इसका तो कर्त्तव्य तत्त्वनिर्णय का अभ्यास ही है, इसी से दर्शनमोह का उपशम तो स्वयमेव होता है; उसमें जीव का कर्त्तव्य कुछ नहीं है।[१]''**

एकेन्द्रिय से असैनी पंचेन्द्रिय तक के जीव तो क्षयोपशमलब्धि से रहित हैं और सैनी पंचेन्द्रिय तीव्र कषायी जीव विशुद्धिलब्धि से वंचित होते हैं; अत: उन्हें दिया गया उपदेश तो निरर्थक ही जानेवाला है।

यही कारण है कि ज्ञानी जीव उन्हें समझाने का प्रयास नहीं करते; किन्तु जो सैनी पंचेन्द्रिय जीव विशेष कर मनुष्य विचार शक्ति सहित हैं और मंदकषायी हैं; यहाँ उन्हें समझाने का प्रयास करते हैं।

वे लोग इस बात को गंभीरता से लें और तत्त्वनिर्णय करने में अपने उपयोग को लगावें - इस भावना से उन्हें सावधान करते हुए पण्डितजी कहते हैं कि **बड़े भाग्य से यह अवसर प्राप्त हुआ है; इसलिए अपने उपयोग को यहाँ-वहाँ उलझाकर या प्रमाद में पड़कर समय बर्बाद मत करो; क्योंकि ऐसी स्थिति सदाकाल रहनेवाली नहीं है।**

विषय-कषाय के कार्यों में तो समय खराब करना ही नहीं है; **व्यवहार-धर्म के कार्यों में भी समय व्यतीत करना समझदारी का काम नहीं है।**

कर्मों के उपशमादि का बहाना लेकर भी अनुद्यमी रहना सही नहीं है; क्योंकि कर्मों के उपशमादि भी तत्त्वनिर्णय में लगे पुरुषार्थ से ही हो जाते हैं। तदर्थ अलग से कोई पुरुषार्थ अपेक्षित नहीं है।

इस प्रकरण का समापन करते हुए पण्डितजी लिखते हैं -

**''इसलिए अवसर चूकना योग्य नहीं है। अब सर्व प्रकार से अवसर आया है, ऐसा अवसर प्राप्त करना कठिन है। इसलिए श्रीगुरु दयालु होकर मोक्षमार्ग का उपदेश देते हैं, उसमें भव्यजीवों को प्रवृत्ति करना।[२]''**

जो जीव मनुष्य हैं, जैन कुल में पैदा हुए हैं; आत्मकल्याण के इच्छुक हैं, स्वाध्याय करते हैं और **मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ को आरंभ से पढ़ते हुए यहाँ तक आ गये हैं; उन लोगों के लिए तो सभीप्रकार से अवसर आ गया है।**

ऐसा अवसर प्राप्त होना सहज बात नहीं है। यदि प्राप्त होने पर भी हमने कुछ नहीं किया तो दुबारा प्राप्त होना भी अत्यन्त दुर्लभ ही है। इसलिए इसी समय मोक्षमार्ग में प्रवृत्ति करना अत्यन्त आवश्यक है। ●

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, नौवाँ अधिकार, पृष्ठ ३१२ २. वही, पृष्ठ ३१३

17 जनवरी 2012, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन में प्रवेश पाकर –

## जीवन उज्ज्वल बनायें

आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन में धार्मिक शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा और नैतिक संस्कारों के साथ-साथ उच्च कोटि की लौकिक शिक्षा अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम से प्रदान की जाती है, जिसमें कक्षा 9 से 12वीं तक चतुर्वर्षीय पाठ्यक्रम निश्चित किया गया है। इसका पंचम सत्र इस वर्ष 8 अप्रैल 2012 से प्रारम्भ होगा, जिसमें कक्षा 9वीं में 15 कन्याओं का प्रवेश लिया जाएगा।

यदि आप अपनी कन्या का उज्ज्वल भविष्य बनाना चाहते हैं, तो शीघ्र ही प्रवेश हेतु प्रवेश फार्म कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं अथवा वेबसाइट **www.atmarthytrust.org** से डाउनलोड कर सकते हैं।

प्रवेश फार्म के साथ राशि रु. 250/- का डिमांड ड्राफ्ट **आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन** के नाम बनवाकर साथ लगाना अनिवार्य है। प्रवेश फार्म भरकर स्वयं या रजिस्टर्ड डाक द्वारा 15 फरवरी 2012 तक जमा कराना अनिवार्य है।

**कार्यालय का पता :** आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन, 'अध्यात्मतीर्थ' आत्मसाधना केन्द्र, घेवरा मोड़, रोहतक रोड़, नई दिल्ली - 41

फोन नं.- 011-28351289, 09310761100

आगामी कार्यक्रम...

### सौधर्म इन्द्र के परिवार में विधान आयोजित

**इन्दौर (म.प्र.) :** पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के उपलक्ष्य में महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री अशोक कुमार जैन-श्रीमती किरण जैन परिवार द्वारा **दिनांक 26 जनवरी** को साधना नगर स्थित श्री दिगम्बर जिन पंचबालयति मंदिर में **पण्डित विरागजी शास्त्री** के निर्देशन में श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन होने जा रहा है। सभी साधर्मीजन कार्यक्रम में उपस्थित होकर लाभ लेवें।

## उज्ज्वल भविष्य की कामना

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक **श्री सचिन्द्रजी शास्त्री** गढाकोटा (म.प्र.) एवं **श्री वीरचंदजी शास्त्री** लाडनूँ (राज.) का विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा आयोजित नेट 2011 परीक्षा में जे.आर.एफ. हेतु चयन हुआ है।

जैनपथप्रदर्शक एवं महाविद्यालय परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

## डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

| | | |
|---|---|---|
| 19 से 24 जनवरी 2012 | राघौगढ (म.प्र.) | पंचकल्याणक |
| 30 जन. से 4 फरवरी | अजमेर (राज.) | पंचकल्याणक |
| 21 से 27 फरवरी | जयपुर (राज.) | पंचकल्याणक |

सोनगढ की पावनधरा पर छात्रों के रहने का –

## अपूर्व अवसर

सोनगढ में संचालित श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह में इस वर्ष कक्षा 6 से भी प्रवेश दिया जा रहा है। साथ ही विगत वर्षों की भांति कक्षा 8 व कक्षा 9 में भी प्रवेश दिया जा रहा है। छात्रों के आवास, भोजन एवं शिक्षण की सम्पूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क है। इच्छुक छात्र आवेदन पत्र मंगाकर 15 मार्च 2012 तक अवश्य भेज दें। ध्यान रहे पूर्व कक्षा में 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त छात्र का आवेदन-पत्र स्वीकार नहीं किया जायेगा।

प्रवेश योग्य समझे गये छात्रों को अप्रैल माह में आयोजित प्रवेश पात्रता शिविर में बुलाया जायेगा, जिसमें छात्र को शिविर की प्रत्येक गतिविधि में उपस्थित रहना आवश्यक है।

**संपर्क :** कामना जैन (प्राचार्या), श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह, राजकोट-भावनगर हाईवे, सोनगढ, जिला-भावनगर (सौराष्ट्र), फोन : (02846) 244510

## मुमुक्षु मण्डप का पुन: प्रकाशन

तत्त्वज्ञान से संस्कारित परिवारों के पुत्र-पुत्रियों के विवाह की पवित्र भावना से पिछले कुछ वर्षों में तीन बार मुमुक्षु मण्डप का प्रकाशन किया गया। अब इसका प्रकाशन ''सर्वोदय ज्ञानपीठ, जबलपुर'' द्वारा किया जायेगा। मुमुक्षु मण्डप का फार्म प्राप्त करने हेतु अपना ई-मेल आई.डी. अथवा पता एस.एम.एस. करें।

**संपर्क सूत्र :** 8796801361, mumukshumandap@gmail.com

**पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-**
**वेबसाईट - www.vitragvani.com**
**संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई**
**Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com**

**प्रकाशन तिथि : 13 जनवरी 2012**

**प्रति,**

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -*
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
**फोन :** (0141) 2705581, 2707458
**E-Mail :** ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127